"नव वर्ष पर लें देश के लिए संकल्प"

"मुनि जयंत कुमार"

मेरे सामने एक पुस्तक है - "जो सहता है, वही रहता है।" जैन विश्व भारती लाडनू द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में लेखक आचार्य महाप्रज्ञ लिखते हैं - जीवन में एक लक्ष्य बनाना चाहिए। लक्ष्यहीन जीवन सार्थक नहीं होता है। तुम क्या बनना चाहते हो? लक्ष्य का निर्धारण करो। लक्ष्य के अनुरूप प्रयोग करो। सफलता अवश्य मिलेगी।

हम नये वर्ष के स्वागत को तत्पर हैं, उत्साहित हैं, प्रफुल्लित हैं। परन्तु स्वागत की सार्थकता तभी होगी जब हम यह आत्मावलोकन करेंगे कि हमारा जीवन लक्ष्यहीन तो नहीं है। जो लक्ष्य बनाया था वह कितना प्राप्त हुआ है, अब इस वर्ष क्या करना है?

ऐसा आत्मचिंतन होने पर लक्ष्य प्राप्ति का जज्बा जगेगा और संकल्प पुष्ट होगा। वैसे हम सभी नये वर्ष पर कुछ न कुछ संकल्प हर बार लेते हैं, पर आम तौर पर यह धारणा बनी हुई है कि संकल्प लेने के लिए होते हैं, निभाने के लिए नहीं। इस बार हम नये वर्ष के दिन नये सूर्योदय पर यह निश्चय करें कि जो संकल्प ग्रहण करेंगे उसे पूर्ण समर्पण के साथ निभायेंगे। संकल्प भी ऐसा हो जिससे स्वयं का हित सधने के साथ दूसरों का, समाज का और देश का हित भी सध सके। ऐसे ही कुछ संकल्पों की चर्चा यहां की जा रही है :-

भ्रष्टाचार खत्म करने की पहल :-

हम नये वर्ष का स्वागत करते हुए भ्रष्टाचार खत्म करने की पहल स्वयं से करने का संकल्प लें, जब देश का व्यक्ति - व्यक्ति इस तरह का संकल्प लेगा तो भ्रष्टाचार जैसी महामारी भी डर कर भाग जायेगी। आज भ्रष्टाचार बढ़ने की चारों ओर चर्चा है, उसके उन्मूलन के लिए अभियान भी चलाया जा रहा है। लोकपाल लाने के प्रयास हो रहे हैं, यह बिल कब पास होगा, इसको किस तरह लागू किया जायेगा, कैसे काम करेगा, इन सब में राजनीतिज्ञयों पर या अन्य लोगों पर निर्भर रहना पड़ेगा।

नहीं, करते हुए का अनुमोदन नहीं करूंगा, उसे अनुचित बताऊंगा। इस तरह के संकल्प लेने से हमें दूसरों पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। भ्रष्टाचार से अपने आप निजात मिल जायेगी। अपेक्षा है स्वयं शुरुआत करने की।

पर्यावरण सुरक्षा का निम्मा :-

प्रदूषित पर्यावरण हम सबके लिए हानिकारक है। इससे बचने का हमारा दायित्व है। नव वर्ष पर हम संकल्प स्वीकार करें कि हम पर्यावरण की सुरक्षा करेंगे और आस-पास के लोगों में इस तरह की भावना विकसित करेंगे। जब आपके संकल्प से पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तो आप भी स्वस्थ श्वास ले सकेंगे और देश को भी इस समस्या से बचाने में योग भूत बनेंगे।

बिजली - पानी का अपव्यय नहीं करेंगे :-

देश के सामने आज बिजली एवं पानी की समस्या सिर चढ़कर बोल रही है। इस समस्या के कारण सबको परेशान होना पड़ रहा है। हम इस वर्ष के नये दिन से बिजली एवं पानी का अपव्यय नहीं करने का संकल्प ग्रहण करें। जब बिजली - पानी का अपव्यय नहीं होगा, उसका संयम होगा तो इस समस्या का समाधान मिल सकेगा जिससे केवल देश को ही नहीं स्वयं को, परिवार को भी लाभ पहुंच सकेगा।

आनी पीढ़ी को संस्कारित करने की शुरुआत :-

नये वर्ष की शुरुआत आनी पीढ़ी को संस्कारित करने के संकल्प से करें। आनी पीढ़ी परिवार और देश की धुरी है। जब यह पीढ़ी संस्कारवान होगी तो परिवार सुखी बनेगा और देश का भविष्य उज्जवल होगा। बच्चों को संस्कारी बनाने में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसलिए एक उद्घोष भी चलता है - "जिस घर के बच्चे संस्कारी वह घर नारी का आभारी।" संस्कार निर्माण में योगदान देने का हम सभी का दायित्व है, परन्तु महिला वर्ग, शिक्षक वर्ग का इस संदर्भ में विशेष दायित्व बनता है।

विसर्जन की भावना :-

विसर्जन शब्द सुनते ही यही दिमाग में कौंधता है कि दान देने की बात हो रही है, पर विसर्जन का मतलब यह नहीं है। जो हमारे पास है, जिसके साथ ममत्व

विसर्जन कहते हैं। इसमें धन भी हो सकता है, समय भी हो सकता है, अन्य कोई भी पदार्थ हो सकता है और अपनी सेवाएं भी हो सकती है। शर्त एक ही है जो भी करें उसके बदले में कुछ प्राप्ति की भावना नहीं होनी चाहिए।

जब ऐसा संकल्प होगा तो देश में मानवता प्रसारित होगी और स्वयं में उदात्तता, अनासक्ति का भाव विकासित होगा। इन तत्वों को अर्जित कर चैन का अनुभव करेंगे।

इन संकल्पों को स्वीकार कर इस बार नये वर्ष का कुछ नये ढंग से स्वागत करें, शुभारम्भ करें। इन संकल्पों से यह वर्ष आपके लिए विकास का वर्ष साबित होगा और उपभोगवादी मनोवृत्ति पर अंकुश लगेगा, जिससे देश महामंदी, भ्रष्टाचार, बिजली-पानी की कमी से पीछा छुड़ा सकेगा और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से दिशा भ्रमित हो रही आधी पीढ़ी के कारण भविष्य की चिन्ता से निजात पा सकेगा।

नोट:- लेखक तेरापंथ धर्मसंघ के जन-सम्पर्क प्रभारी है।